विन्यास प्रणाली व आर्थिक प्रारूप

प्रश्न १- भारतीय नगरों की आंतरिक संरचना की विशेषताओं का वर्णन करें ।

उत्तर :- नगरों की आंतरिक संरचना का तात्पर्य-नगर की उस व्यवस्था से है जो उसके विन्यास-प्रणाली और आर्थिक प्रारूप को बताता है । नगर का विकास केन्द्रीय स्थान पर होता है और उसकी आंतरिक संरचना की निश्चित प्रवृत्तियाँ होती हैं । इन्हीं प्रवृत्तियों को सैद्धान्तिक अभिव्यक्ति देने का प्रयास कई विद्वानों द्वारा किया गया है । इनमें बर्गेस, हॉयट तथा उल्मैन एवं हैरिस का प्रमुख स्थान है । लेकिन, इन विद्वानों के सैद्धान्तिक अभिव्यक्ति को भारतीय नगरों के संदर्भ में नहीं देखा जा सकता है क्योंकि ये सिद्धान्त विकसित देशों के नगरों के संदर्भ में दिए गए हैं और भारतीय नगरों के आंतरिक संरचना का विक[illegible]स कुछ ऐसे कारकों से प्रभावित है, जिसका प्रभाव विकसित देशों के नगरों पर [illegible] नहीं देखा जा सकता है । भारतीय नगरों की आंतरिक संरचना पर नीचे वर्णि[illegible]यों का व्यापक प्रभाव है । ये तथ्य निम्नलिखित हैं :-

(1) भारत के अनेक नगर प्राचीन विकास का इतिहास रखते हैं । ये मुख्यत: धार्मिक नगर हैं और इनकी संरचना पर धार्मिक कार्यों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव है । पुन: अनेक नगर मध्ययुगीन हैं, जो वर्तमान समय में अत्यंत ही सघन जनसंख्या के क्षेत्र हो चुके हैं । इन दोनों ही नगरों में अत्यंत ही संकरी और अनियोजित सड़क-प्रणाली है । सघन आबादी ने इन्हें लगभग गंदी बस्ती जैसा बना दिया है ।

(2) औपनिवेशिक संस्कृति का भी प्रभाव देखने को मिलता है । भारत के अनेक नगरों में दो प्रकार की आंतरिक संरचना है । एक है अनियोजित संरचना जो औपनिवेशिक प्रशासन के पूर्व ही स्थापित हो चुका था । और दूसरी है औपनिवेशिक काल की संरचना जो नियोजित है तथा मुख्यत: ब्रिटिश अधिकारियों के निवास, सैनिक छावनी तथा प्रशासनिक कार्यों हेतु विकसित किया गया था ।

(3) भारतीय नगरों की आंतरिक संरचना पर ग्रामीण नगरीय स्थानांतरण का भी प्रभाव पड़ा है । यह प्रक्रिया हाल के वर्षों में अत्यंत ही तीव्र हो गई है । इसके परिणाम स्वरूप अनेक नगरों की जनसंख्या में विस्फोट हुआ है जिसके परिणामस्वरूप वृहद क्षेत्रों में गंदी बस्ती का विकास हुआ है तथा अनेक बाह्य क्षेत्रों में गुणवत्ता की दृष्टि से निम्न स्तरीय भौतिक संरचना का विकास हुआ है ।

(4) स्वतंत्रता के बाद अधिकतर बड़े नगरों के विकास के लिए मास्टर प्लान बनाए गए हैं । इसके कार्यान्वित होने से नगरों के नवीन बाह्य क्षेत्रों में नियोजित संरचना देखने को मिलती है । इन क्षेत्रों में मुख्यत: आवासीय कार्य होता है ।

आंतरिक संरचना पर सामाजिक और राजनीतिक कारकों का प्रभाव

§5§ इन कारकों के कारण सामाजिक विलगाव (Social Segregation) के आधार पर अनेक अधिवासीय क्षेत्रों का विकास हुआ है। ऐसे क्षेत्रों में कार्य अथवा आय के आधार पर अधिवासीय कार्य न होकर सामाजिक लगाव और आत्मीयता के आधार पर होता है। इससे मिश्रित अधिवासीय क्षेत्र विकसित होते हैं।

§6§ स्वतंत्रता के बाद नियोजित रूप से द्वितीयक और तृतीयक कार्यों के विकास का प्रयास किया गया है। इसके परिणामस्वरूप अनेक नवीन औद्योगिक और प्रशासनिक नगरीय बस्तियों का विकास हुआ है। लेकिन अनुमान से अधिक ग्रामीण नगरीय स्थानान्तरण के परिणामस्वरूप इन नगरों में भी गंदी बस्तियों का विकास प्रारम्भ हो चुका है।

§7§ नगरों की आंतरिक संरचना पर ग्रामीण संरचना का भी प्रभाव देखने को मिलता है। यह प्रवृत्ति मुख्यतः उन छोटे नगरों में दृष्टिगत होता है, जो न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ति कर के गांव से नगर में परिवर्तित हुए हैं। इन नगरीय बस्तियों के निर्मित क्षेत्र अत्यंत ही निम्न स्तर के होते हैं और प्रमुख सड़क भी पर्याप्त संकरी होती है। सड़के कायदे से समकोण पर मिलती हैं।

आर्थिक कारकों के प्रभाव से भारतीय नगरों की आंतरिक संरचना में निम्नलिखित विशेषताओं का विकास हुआ है -

§अ§ पश्चिमी देशों की भाँति भारतीय नगरों के मध्य में भी केन्द्रीय बाजार-बस्ती पाई जाती है। लेकिन इनकी संरचनात्मक विशेषताएँ भिन्न होती हैं। पश्चिमी देशों के समान यह सभी नगरों में अट्टालिकाओं का क्षेत्र नहीं होता है। पुनः पश्चिमी देशों में इस क्षेत्र का उपयोग विशेष वाणिज्य-व्यापार, वित्त और बीमा जैसे कार्यों के लिए होता है। जबकि भारतीय नगरों में इन कार्यों की प्रधानता तो होती है लेकिन अधिवासीय कार्यों की भी बहुलता है। सामान्यतः सतह और प्रथम मंजिल का उपयोग केन्द्रीय बाजार के कार्य हेतु होता है और अन्य मंजिलों का उपयोग अधिवास होता है।

§आ§ विकसित देशों के नगरीय बस्तियों की भौतिक संरचना की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि नगर के मध्य सर्वाधिक ऊँचे मकान होते हैं। केन्द्र से मकान की ऊँचाई में क्रमशः कमी आती है। भारतीय नगरों की परिस्थिति भिन्न है। यहाँ मकान की ऊँचाई का कोई निश्चित प्रवृत्ति नहीं है। यत्र-तत्र बहुमंजिले मकान देखने को मिलते